This question paper contains **16+4** printed pages]

HPAS (M)—2014

HINDI (COMPULSORY)

(General Hindi)

Time : 3 Hours *Maximum Marks* : 100

निर्देश :— कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रश्न क्रमांक 1 (एक) और **2** (दो) अनिवार्य हैं। शेष प्रश्नों में से किन्हीं 3 (तीन) प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. निम्नलिखित अंग्रेजी अवतरण का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 20

It is Gramci's great contribution to have emphasized hegemony, and also to have understand it at a depth which is, I think, rare. For hegemony supposes the existence of something which is trely total, which is not merely secondary or superstructural, like the weak sense of ideology, but which is lived at such a depth, which

saturates the society to such an extent, and which, as Gramci put it, even constitutes the limit of common sense for most people under its way, that it corresponds to the reality of social experience very much more clearly than any notions derived from the formula of base and superstructure. For if ideology were merely some abstract imposed notion, if our social and political and cultural ideas and assumptions and habits were merely the result of specific manipulation, of a kind of overt training which might be simply ended or withdrawn, then the society would be very much easier to move and to change than in practice it has ever been or is. This notion of hegemony as deeply saturating the consciousness of a society seems to be fundamental. And hegemony has the advantage over

general notions of totality, that it at the same time emphasizes the facts of domination. Above all we have to give an account which allows for its elements of real and constant change. We have to emphasize that hegemony is not a singular; indeed that its own internal structures are highly complex and have continually to be renewed, recreated and defended; and by the same token, that they can be continually challenged and in certain respects modified. That is why I would propose a model which allows for thin kind of variation and contradiction, its sets of alternative and its processes of change.

अथवा

The artist in the capitalist age found himself in a highly peculiar situation. King Midas had turned everything he

touched into gold : Capitalism turned everything into commodity. With a hitherto unimaginable increase in production and productivity, extending the new order dynamically to all parts of the globe and all areas of human experience, capitalism dissolved the old world into a cloud of whirling molecules, destroyed all direct relationships between producer and consumer and flung all products on to an anonymous market to be bought or sold. Previously the artisan had worked to order for a particular client. The commodity producer in a capitalist world now worked for an unknown buyer. His products were swallowed up in the competitive flood and carried away into uncertainty. Commodity production extending

everywhere, the increasing devision of labour, the splitting up of the job itself, the anonymity of the economic forces– all this destroyed the directness of human relationship led to man's increasing alienation from social reality and from himself. In such a world art, too, became a commodity and the artist commodity producer. Personal patronage was superseded by a free market whose workings were difficult or impossible to comprehend, a conglomerate of nameless, the so-called 'public'. The work of art was subjected more and more to the laws of competition. For the first time in the history of mankind the artist became a 'free' artist, a 'free' personality, free to the point of absurdity, of icy loneliness. Art became occupation that was half-romantic, half-commercial.

2. (अ) निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिए : 10

कविता मनुष्य के हृदय को व्यक्तिगत संबंध के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक सामान्य भावभूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत् के नाना रूपों और व्यापारों के साथ उसके प्रकृत संबंध का सौंदर्य दिखायी पड़ता है। इस सौंदर्य के अभ्यास से हमारे मनोविकारों का परिष्कार और जगत् के साथ हमारे रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह होता है। जिस प्रकार जगत् अनेक रूपात्मक है उसी प्रकार हमारा हृदय भी अनेक भावात्मक है। इन अनेक भावों का व्यायाम और परिष्कार तभी हो सकता है जबकि उन सबका प्रकृत सामंजस्य जगत् के भिन्न-भिन्न रूपों और व्यापारों के साथ हो जाये। जब तक यह सामंजस्य पूरा-पूरा न होगा तब तक यह नहीं कहा जा सकता है कि कोई पूरी तरह जी रहा है।

उसकी सजीवता की मात्रा अधूरी और प्रसार संकुचित समझा जायेगा। अतः काव्य का काम मनुष्य के सब भावों और सब मनोविकारों के लिए प्रकृति के अपार क्षेत्र में आलंबन का विषय चुनकर रखना है।

अथवा

मनुष्य की जीवन–शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथामोहों को रौंदती चली आ रही है। न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती–बहाती यह जीवनधारा आगे बढ़ी है। संघर्षों से मनुष्य ने नयी शक्ति पायी है। हमारे सामने समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है। देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति बाद की बात है। सब कुछ में मिलावट है, सब कुछ अविशुद्ध है। शुद्ध है केवल मनुष्य की दुर्दम

जिजीविषा। वह गंगा की अबाधित-अनाहत धारा के समान सब कुछ हो हजम करने के बाद भी पवित्र है। सभ्यता और संस्कृति का मोह क्षण-भर बाधा उपस्थित करता है, धर्माचार का संस्कार थोड़ी देर तक इस धारा से टक्कर लेता है, पर इस दुर्दम धारा में सब कुछ बह जाते हैं । जितना कुछ इस जीवन-शक्ति को समर्थ बनाता है, उतना उसका अंग बन जाता है, बाकी फेंक दिया जाता है।

(ब) निम्नलिखित पद्यांश की व्याख्या कीजिए : 10

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे

भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

अभी गीला पड़ा है

बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से

कि जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने

नील जल में या किसी की

गौर झिलमिल देह

जैसे हिल रही हो।

और⋯

जादू टूटता है इस उषा का अब

सूर्योदय हो रहा है।

अथवा

सब चेहरों पर सन्नाटा

हर दिल में गड़ता काँटा

हर घर में गीला आटा

यह क्यों होता है ?

जीने की जो कोशिश है

जीने में यह जो विष है

साँसों में भरी कशिश है

इसका क्या करिए ?

कुछ लोग खेत बोते हैं

कुछ चट्टानें ढोते हैं।

कुछ लोग सिर्फ होते हैं

इसका क्या मतलब ?

मेरा पथराया कंधा

जो है सदियों से अंधा

जो खोज चुका हर धंधा

क्यों चुप रहता है ?

यह अग्निकिरीट मस्तक

जो है मेरे कंधों पर

यह जिंदा भारी पत्थर

इसका क्या होगा ?

3. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों में से किन्हीं दस का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 20

(1) अंगारे उगलना

(2) कितने पानी में होना

(3) दूध का धोया

(4) शहद की छुरी होना

(5) औंधी खोपड़ी होना

(6) किरकिरी होना

(7) घड़ों पानी पड़ना

(8) थाली का बैंगन

(9) पत्थर पर जोंक नहीं लगती

(10) इन तिलों में तेल नहीं

(11) चोर के पैर नहीं होते

(12) दुधारू गाय की लात भली

(13) काक कहे कलि कंठ कठोरा

(14) हाथ कंगन को आरसी क्या

(15) एक अकेला दो ग्यारह

4. (अ) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिये : 10

(1) बहन

(2) अचल

(3) गरुड़

(4) धनुष

(5) अजेय

(6) यमुना

(7) प्राकृतिक

(8) चाँदनी

(9) कुबेर

(10) घोंसला

(ब) निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए : 10

(1) अनिवार्य

(2) तिलांजलि

(3) अपव्यय

(4) गंध

(5) जागृति

(6) क्रिया

(7) विधि

(8) महामना

(9) पदोन्नत

(10) भूषण

5. (अ) निम्नलिखित अनेकार्थक शब्दों के दो–दो अर्थ लिखिए : 10

(1) पक्ष

(2) जड़

(3) गौ

(4) अद्‌वृ

(5) कला

(6) सार

(7) सारंग

(8) हल

(9) उद्योग

(10) पद

(ब) निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए **एक-एक** शब्द लिखिए : 10

(1) जो अभी नहीं आया

(2) अधिकार रखने वाली संस्था

(3) वे हथियार जो आग लगा देते हैं

(4) शीघ्र प्रसन्न हो जाने वाला

(5) जिसका मिलना कठिन हो

(6) सुनी-सुनायी प्रचलित बात

(7) अनुचित बात के लिए अड़ना

(8) परस्पर विरोधी पक्षों से अलग रहने वाला

(9) समुद्र में लगी आग

(10) इतिहासक्रम आरंभ होने से पूर्व की घटना

6\. (अ) निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए : 10

(1) पोखर

(2) कोख

(3) पलंग

(4) बांझ

(5) भैंस

(6) घोड़ा

(7) सूई

(8) प्यास

(9) करोड़

(10) अटारी

(ब) निम्नलिखित शब्द-युग्मों के अर्थ लिखिये : 10

(1) गेय-ज्ञेय

(2) समाधि-समिधा

(3) शंकर-संकर

(4) परिणाम-परिमाण

(5) भीति–भित्ति

(6) निदान–निधान

(7) विमर्श–विमर्ष

(8) तरणी–तरुणी

(9) प्रतीक–प्रतीप

(10) शशक–शशांक

7\. (अ) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं **पाँच** शब्दों के उपसर्ग अलग करते हुए यह स्पष्ट कीजिए कि उपसर्ग के प्रयोग से मूल शब्द के अर्थ में क्या परिवर्तन हुआ है ? 10

(1) अनासक्ति

(2) प्रत्यालोचना

(3) निराकरण

(4) लावारिस

(5) हमनाम

(6) अनहोनी

(7) अनलंकृत

(8) उद्घाटन

(9) अनभिज्ञ

(10) निराहार

(ब) निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** शब्दों के हिंदी में अर्थ लिखिए : 10

(1) Constellation

(2) Zodiac

(3) Accusation

(4) Firewood

(5) Sedition

(6) Posthumous

(7) Muster-roll

(8) Testimonial

(9) Honorarium

(10) Brimstone

8. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए : 20

(1) मैंने एक ग्लास गर्म गाय की दूध पी है।

(2) मैं आप के पास आ जाता हूँ।

(3) सीता कितनी सुंदर गाती है!

(4) उसने नाच कर बता दिया कि उसको नाच आती है।

(5) मैंने एक कमीज खरीदा है।

(6) बीमारी के बावजूद भी उसने परीक्षा दिया।

(7) मैं चुपचाप शांतिपूर्वक आपको सुनता रहा ।

(8) सरोजनी नायडू विदुषी स्त्री थीं।

(9) संभवतः आज उसका अवश्य आना होगा।

(10) वह अनेकों भाषा जानता है।